जैव विविधता संरक्षण की एक पावन परम्परा
पञ्चपल्लव और पञ्चवटी

राधे कृष्ण दूबे
सहायक वन संरक्षक, उ०प्र० राज्य जैव विविधता बोर्ड, लखनऊ
ईमेलः rkdubey197@gmail.com

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में पांच के समूह को पूर्णता प्रदान करने वाले समूह के रूप में देखा जाता है। पञ्चपरमेश्वर की तरह पञ्चपल्लवों और पञ्चवटी का भारतीय मानस में विशेष महत्व है, लोग इनके प्रति विशेष सम्मान रखते हैं तथा श्रद्धापूर्वक रक्षा और सेवा करते हैं। पञ्चपल्लव और पञ्चवटी की प्रजातियाँ असंख्य पादप व जन्तु प्रजातियों को आश्रय–भोजन और संरक्षण प्रदान करते हैं।

मैंने अनेक लोगों को इनके वास्तविक स्वरूप के बारे में भ्रमित होते देखा है, लोग पञ्चपल्लव और पञ्चवटी को एक समझने की भूल करते हैं। पञ्चवटी के नाम पर देश में अनेक मॉडल प्रचलन में हैं किन्तु उनका शास्त्रीय आधार नहीं मिल पाता, लगता है लोगों ने अपनी कल्पना से स्थानीय परिस्थितियों को देखते हुये इन पञ्चवटियों की परम्परा बना रखी है। यह सच है कि वृक्षारोपण किसी भी प्रकार किया जाए लाभकारी होता है किन्तु निर्धारित विधा का पालन करने से यह और अधिक लाभकारी हो जाता है। अतः भ्रान्तियों के निवारण इस लेख के माध्यम से करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि लोग इनका उपयोग कर पर्यावरण और जैव विविधता संरक्षण में योगदान करते हुए अपने आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

पञ्चपल्लव और पञ्चवटी का अन्तर

पल्लव का भावार्थ है नई पत्तियों का गुच्छा और वट का भावार्थ होता है छाया वाला वृक्ष। अतः पत्तियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण पाँच वृक्ष समूह को पञ्चपल्लव और छाया की दृष्टि से महत्वपूर्ण पाँच वृक्ष समूह को पञ्चवटी कहा जाता है।

पञ्चपल्लवों के प्रकार

पञ्चपल्लव में हर प्रजाति की पत्ती का अपना अलग–अलग आध्यात्मिक, तांत्रिक, गन्धीय व औषधीय प्रभाव होता है, अतः अलग–अलग उद्देश्य के लिये अलग–अलग पौधों के पञ्पल्लव बनाये गये जो निम्नलिखित प्रकार हैं–

1. **वैदिक कर्म :** वैदिक पूजा हेतु पूजा–कलश के घट पर स्थापित किए जाने वाले पञ्चपल्लव में पीपल (*Ficus religiosa*), गूलर (*Ficus glomerata*), पाकर (*Ficus lacor*), आम (*Mangifera indica*) और बरगद (*Ficus benghalensis*) की पत्तियों का प्रयोग किया जाता है।

अश्वत्थाडुम्बरप्लक्षचूतन्य पोधपल्लवाः।
पञ्चपल्लवमित्युक्तं सर्वकर्मणि शोभनम्।।

– ब्रह्मपुराण

वैदिक पञ्चपल्लव

बरगद

पाकड़

पीपल

गूलर

आम

कटहल

नीम

जामुन

पञ्चवटी

बेल

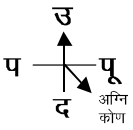

पीपल

बरगद

वेदी

साधना के लिए

आँवला

अशोक

मौलश्री

कैथ (कपिथ)

बिजौरा नींबू

आम्राअश्वत्थवटपर्कटीयज्ञोडुम्बराणि

– शब्दकल्पद्रुम

यह सबसे अधिक प्रचलित पञ्चपल्लव है। लोग इसका पञ्चपल्लव के रूप में रोपण भी करते हैं जिसमें सामान्तया यह गलती की जाती है कि लोग पांचों वृक्षों को एक थावले में रोपण कर देते हैं जिससे पोषण के अभाव में इस समूह के कई वृक्ष अकाल मृत्यु को प्राप्त कर लेते हैं और अन्ततः एक या दो प्रजाति ही जीवित रह पाती है। अतः इन्हें अलग–अलग रोपित करना चाहिए।

2. **तन्त्र कर्मः** तान्त्रिक पूजा में कटहल (*Artocarpus heterophyllus*), आम (*Mangifera indica*), पीपल (*Ficus religiosa*), बरगद (*Ficus benghalensis*) और मौलश्री (*Mimusops elengi*) का पल्लव प्रयोग किया जाता है।

पनसाम्रं तथाश्वत्थं वटं वकुलमेव च।
पञ्चपल्लवमुक्तञ्च मुनिभिस्तन्त्रवेदिभिः।।

–तन्त्रसारः

3. **गन्धकर्मः** पत्तियों की गन्ध द्वारा वायु अथवा तैल को शुद्ध करने के लिए आम (*Mangifera indica*), जामुन (*Syzygium cumini*), कैथ (*Feronia limonia*), बीजौरा नींबू (*Citrus medica*) और बेल (*Aegle marmelos*) का पल्लव प्रयोग किया जाता है।

आम्रजम्बूकपित्थानां बीजपूरकविल्वयोः।
गन्धकर्म्मणि सर्व्वत्र पत्राणिं पञ्चपल्लवम्।।

– शब्दचन्द्रिका

4. **मुख धावन** (Mouth wash)ः मुख की बीमारियों से मुक्ति के लिए परवल (*Trichosanthus dioica*) नीम, जामुन (*Syzygium cumini*), आम (*Mangifera indica*), चमेली (*Jasminum grandiflorum*) के पञ्चपल्लव अर्थात् पत्तियों के क्वाथ (काढ़े) से कुल्ला किया जाता है–

पटोल निम्ब जम्ब्वाम्र मालती नव पल्लवाः।
पञ्चपल्लवजः श्रेष्ठः कषायो मुखधावने ।।

–चक्रदत्त

पञ्चवटी

पाँच छायादार वृक्षों के समूह को पञ्चवटी कहा जाता है–

1. **राम से सम्बन्धित पञ्चवटीः** राम ने वनवास के अन्तिम चरण में जिस पञ्चवटी में निवास किया था वे सभी बरगद (Ficus bengalensis) के वृक्ष थे।

2. **ध्यान–साधना के लिए पञ्चवटीः** स्कन्दपुराण में ध्यान–साधना के लिए पञ्चवटी रोपण की विधि बतायी गयी है, विवेकानन्द के आध्यात्मिक मार्गदर्शक श्री राम कृष्ण परमहंस ने स्वयं कलकत्ता के दक्षिणेश्वर में साधना के लिए इसी पञ्चवटी का रोपण किया था। इसमें बरगद, पीपल (*Ficus religiosa*), आँवला (*Embelica officinalis*), बेल (*Aegle marmelos*) और अशोक (*Saraca asoca*) का रोपण किया जाता है।

जिस तरह वास्तु विद्या में अलग–अलग दिशाओं का मानव मन पर अलग–अलग प्रभाव बताया जाता है उसी तरह अलग–अलग वृक्षों की छाया भी मानव मन पर अलग–अलग प्रभाव डालती है। प्रस्तुत पञ्चवटी में ऋषियों ने इन दो प्रभावों के विज्ञान का भी प्रयोग किया है। इसके रोपण की विधि निम्न प्रकार हैः–

अश्वत्थविल्ववृक्षञ्च वटधात्रीअशोककम्।
वटीपञ्चकमित्युक्तं स्थापयेत् पञ्चदिक्षु च।।

अश्वत्थं स्थापयेत् प्राचि विल्वमुत्तरभागतः।
वटं पश्चिमभागे तु धात्रीं दक्षिणतस्तथा।।

अशोकं वह्निदिक्स्थाप्यं तपस्यार्थं सुरेश्वरि।
मध्ये वेदीं चतुर्हस्तां सुन्दरी सुमनोहराम्।।

प्रतिष्ठां कारयेत्तस्याः पञ्चवयोतरं शिवे।।
अनन्तफलदात्री सा तपस्याफलदायिनी।।

–स्कन्दपुराण

अर्थात पीपल, बेल, बरगद, आँवला तथा अशोक वृक्ष पञ्चवटी कहे गये हैं इनकी स्थापना पाँच दिशाओं में करनी चाहिए। हे देवी! पीपल को पूरब में, बेल को उत्तर, बरगद को पश्चिम, आँवले को दक्षिण और अशोक को अग्निकोण में तपस्या के लिए स्थापित करना चाहिए। इसके पाँच वर्षों पश्चात् इसके मध्य में चार हाथ की सुन्दर सुमनोहर वेदी का निर्माण करना चाहिए। यह पञ्चवटी अनन्त फल देने वाली और तपस्या का फल देने वाली होती है।

निष्कर्ष

अगर हम उपरोक्त में सर्वाधिक प्रचलित वैदिक पञ्चपल्लव (बरगद, पीपल, पाकड़, गूलर और आम) अथवा स्कन्दपुरणोक्त पञ्चवटी (बरगद, पीपल, बेल, आँवला और अशोक) में प्रयुक्त प्रजातियों की फीनालॉजी (*Phenology*), फल–फूल–पत्ती–छाल के पोषणीय महत्व (*Nutritional Value*) व इनके पर्यावरणीय गुणों पर ध्यान दें तो इस निष्कर्ष पर पहुँचेगें कि परम्परागत वानिकी के ये समूह पूरे वर्ष भर स्थानीय जैव विविधता और पर्यावरण संरक्षण में अद्वितीय योगदान करते हैं।